राज्य के शिलालेख

घोसुण्डी शिलालेख

नगरी (चित्तौड़) के निकट घोसुण्डी गाँव में प्राप्त । इसमें ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के गजवंश के सर्वतात द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने एवं चारदीवारी बनाने का उल्लेख है।

नाथ प्रशस्ति

971 ई. का यह लेख एकलिंगजी के मंदिर के पास लकुलीश मंदिर से प्राप्त हुआ है। इसमें नागदा नगर एवं बापा, गुहिल तथा नरवाहन राजाओं का वर्णन है।

हर्षनाथ की प्रशस्ति

हर्षनाथ (सीकर) के मंदिर की यह प्रशस्ति 973 ई. की है। इसमें मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा किये जाने का उल्लेख है। इसमें चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख है।

आर्थुणा के शिव मंदिर की प्रशस्ति

आर्थुणा (बाँसवाड़ा) के शिवालय में उत्कीर्ण 1079 ई. के इस अभिलेख में वागड़ के परमार नरेशों का वर्णन है।

राज्य के शिलालेख

किराडू का लेख

किराडू (बाड़मेर) के शिवमंदिर में संस्कृत में 1161 ई. का उत्कीर्ण लेख जिसमें वहाँ की परमार शाखा का वंशक्रम दिया है। इसमें परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बताई गई है।

बिजौलिया शिलालेख

बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर के पास एक चट्टान पर उत्कीर्ण 1170 ई. का यह शिलालेख जैन श्रावक लोलाक द्वारा मंदिर के निर्माण की स्मृति में बनवाया गया था। इसमें सांभर व अजमेर के चौहानों को वत्सगौत्रीय ब्राह्मण बताते हुए उनकी वंशावली दी गई है। इसका रचयिता गुणभद्र था। इस लेख में उस समय के क्षेत्रों के प्राचीन नाम भी दिये गये हैं।

सच्चिया माता मंदिर की प्रशस्ति

ओसियाँ (जोधपुर ग्रामीण) में सच्चिया माता के मंदिर में उत्कीर्ण इस लेख में कल्हण एवं कीर्तिपाल का वर्णन है।

राज्य के शिलालेख

लूणवसही व नेमिनाथ मंदिर की प्रशस्ति

माउण्ट आबू के इन प्रसिद्ध जैन मंदिरों में इनके निर्माता वस्तुपाल, तेजपाल तथा आबू के परमार वंशीय शासकों की वंशावली दी हुई है। यह प्रशस्ति उस समय के जनसमुदाय की विद्यानिष्ठा, दान- परायणता एवं धर्मनिष्ठा की भावना का अच्छा वर्णन करती है।

चीरवा का शिलालेख

चीरवा (उदयपुर) के एक मंदिर के बाहरी द्वार पर उत्कीर्ण 1273 ई. का यह शिलालेख बापा रावल के वंशजों की कीर्ति का वर्णन करता है।

जैन कीर्तिस्तंभ के लेख

चित्तौड़ के जैन कीर्ति स्तंभ में उत्कीर्ण तीन अभिलेखों का स्थापनकर्ता जीजा था। इसमें जीजा के वंश, मंदिर निर्माण एवं दानों का वर्णन मिलता है। ये 13वीं सदी के हैं।

RAJASTHAN CLASSES

राज्य के शिलालेख

रणकपुर प्रशस्ति

रणकपुर के चौमुखा मंदिर के स्तंभ पर उत्कीर्ण यह प्रशस्ति 1439 ई. की है। इसमें मेवाड़ के राजवंश, धरणक सेठ के वंश एवं उसके शिल्पी का परिचय दिया गया है। इसमें बापा एवं कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। इसमें महाराणा कुंभा की विज्यों एवं विरुदों का पूरा वर्णन है।

कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति

यह विजय स्तंभ में संस्कृत भाषा में कई शिलाओं पर कुंभा के समय (दिस., 1460 ई.) में उत्कीर्ण की गई है। अब केवल दो ही शिलाएँ उपलब्ध हैं। इस प्रशस्ति में बापा से लेकर कुंभा तक की विस्तृत वंशावली एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन है। इसके प्रशस्तिकार महेश भट्ट हैं।

कुंभलगढ़ का शिलालेख (1460ई.)

यह 5 शिलाओं पर उत्कीर्ण था जो कुंभश्याम मंदिर (कुंभलगढ़), जिसे अब मामदेव मंदिर कहते हैं, में लगाई हुई थीं। इसके राज वर्णन में गुहिल वंश का विवरण एवं शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। इसमें बापा रावल को विप्रवंशीय बताया गया है। रचयिता: कवि महेश|

राज्य के शिलालेख

एकलिंगजी के मंदिर की दक्षिण द्वार की प्रशस्ति

यह महाराणा रायमल द्वारा मंदिर के जीर्णोद्धार के समय (मार्च, 1488 ई.) उत्कीर्ण की गई है। इसमें भी मेवाड़ के शासकों की वंशावली, तत्कालीन समाज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति व नैतिक स्तर की जानकारी दी गई है। इसके रचियता महेश भट्ट हैं।

रायसिंह प्रशस्ति (जूनागढ़ प्रशस्ति)

बीकानेर नरेश रायसिंह द्वारा जूनागढ़ दुर्ग में स्थापित की गई प्रशस्ति जिसमें दुर्ग के निर्माण की तिथि तथा राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है। इसके रचयिता जइता नामक जैन मुनि थे। यह संस्कृत भापा में है।

जगन्नाथ राय प्रशस्ति

यह उदयपुर के जगन्नाथराय मंदिर में काले पत्थर पर मई, 1652 में उत्कीर्ण की गई थी। इसमें बापा से सांगा तक की उपलब्धियों, हल्दीघाटी युद्ध, कर्ण के समय सिरोंज के विनाश के वर्णन के अलावा महाराणा जगतसिंह के युद्धों एवं पुण्य कार्यों का विस्तृत विवेचन है। प्रशस्ति के रचयिता कृष्णभट्ट हैं।

राज्य के शिलालेख

राज प्रशस्ति

राजसमन्द झील की नौ चौकी पाल की ताकों में लगी 25 काले पाषाणों पर संस्कृत में उत्कीर्ण यह प्रशस्ति 1676 ई. में महाराजा राजसिंह द्वारा स्थापित कराई गई। यह पद्यमय है। इसके रचयिता रणछोड़ भट्ट तैलंग थे। इसमें बापा से लेकर जगतसिंह- राजसिंह तक के शासकों की वंशावली व उपलब्धियों तथा महाराणा अमरसिंह द्वारा मुगलों से की गई संधि का उल्लेख है। राजसिंह के समय का विशद् वर्णन है।

वैद्यनाथ मंदिर की प्रशस्ति

पिछोला झील (उदयपुर) के निकट सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ मंदिर में स्थित महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय यह प्रशस्ति 1719 ई. की है। इसमें बापा के हारीत ऋषि की कृपा से राज्य प्राप्ति का उल्लेख है तथा बापा से लेकर संग्रामसिंह-द्वितीय जिसने यह मंदिर बनवाया था, तक का संक्षिप्त परिचय है।

राजस्थान सामान्य ज्ञान
वन लाइनर प्रश्न-उत्तर
500+ क्लिक करें एवं पढ़ें

राजस्थान सामान्य ज्ञान
लाइव क्लास की सभी पीडीएफ
फ्री डाउनलोड करें
क्लिक करके डाउनलोड करें एवं पढ़ें

नवीनतम राजस्थान GK
(टॉपिक वाइज नोट्स)
Free PDF
Click Here
RAJASTHAN CLASSES
राजस्थान क्लासेज
By - Aadarsh Sir

लाइव क्लासेज यहां से देखें

Click Here

Click Here

अन्य नोट्स PDF हेतु क्लिक करें

Click Here

हर नोट्स, मॉडल पेपर की लिंक यहां मिलेगी

Click Here